<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

01564–220 233

जीवन विज्ञान सघन प्रषिक्षक्षण षिविर प्रारंभ

षिक्षक विद्यार्थी निर्माण की भावना रखें : आचार्य महाश्रमण

<u>सरदारषहर, 19 मई, 2010</u>

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि षिक्षक के सामने विद्यार्थी के निर्माण की भावना होनी चाहिए। षिक्षक निष्ठा के साथ ज्ञान देता है और संस्कार भी देने का प्रयास करता है तो वह विद्यार्थी की अनुपम सेवा करता है। आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा प्रदत्त जीवन विज्ञान विद्यार्थी के भावनात्मक विकास पर ध्यान देता है। वर्तमान षिक्षा जगत में भावात्मक विकास पर ध्यान नहीं दिया गया। इस कारण कमी रह गई है। आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान के द्वारा इस कमी को दूर करने का प्रयास किया है। आज विद्या संस्थानों में जीवन विज्ञान रूचि के साथ पढ़ाया जाता है।

उक्त विचार उन्होंने जीवन विज्ञान अकादमी जैन विष्व भारती लाडनूं द्वारा आयोजित तथा जयंतीलाल, विजय कुमार सुयस सुराणा द्वारा प्रायोजित जीवन विज्ञान सघन प्रषिक्षण षिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सेवा एक महत्वपूर्ण तत्त्व हे। सेवा की सबको अपेक्षा होती है। जिस संगठन समुदाय में सेवा की व्यवस्था ठीक नहीं होती है तो उसमें बिखराव पैदा हो सकता है। सेवा एक तरह से स्निग्ध पदार्थ है जो एक दूसरे को जोड़ता है। सेवा लेने वाले को संतोष देना बहुत बड़ी बात है। आलोचना पर ध्यान न देकर निर्जरा की भावना से सेवा करना महत्वपूर्ण है। हमारे धर्मसंघ में सेवा की व्यवस्था है। सेवा केन्द्रों में वृद्ध साधु–साध्वियों की सेवा होती है वहां सेवा करने वाले साधु–साध्वियां कठिनाइयों को झेलकर भी सेवा करते हैं। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि ज्ञान दान देना भी सेवा है। किसी को चित्तसमाधि देने का प्रयास करना भी सेवा है। सेवा करते हुए प्रतिफल की कामना होती है तो वह कामना सेवा के महत्त्व को कम कर देती है।

प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किषन ने कहा कि जीवन विज्ञान को कला का ज्ञान कराने वाली पद्धति का नाम है जीवन विज्ञान।

इस अवसर पर जीवन विज्ञान के निदेषक डॉ. ललित किषोर, डॉ. अंषुमान, जीवन विज्ञान प्रषिक्षक हनुमान शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

ष्शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)